7 विरोध और विद्रोह का समय

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि बादशाह अकबर ने 50 सालों तक शासन करके एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। उसके बाद उसका बेटा जहाँगीर सन् 1606 से 1627 तक और उसके बाद जहाँगीर का बेटा शाहजहाँ 1627 से 1658 तक बादशाह रहे। शाहजहाँ के काल में दिल्ली का लाल किला, जामा मस्जिद और आगरा में प्रसिद्ध ताजमहल का निर्माण हुआ।

सन् 1657 में बादशाह शाहजहाँ बीमार पड़ा और उसके चारों बेटे दाराशिकोह, औरंगजेब, शाहशुजा और मुराद बादशाह बनने के लिए आपस में युद्ध करने लगे। इस युद्ध में औरंगजेब ने अपने सभी भाईयों को पराजित कर दिया और वह सन् 1658 में दिल्ली का बादशाह बना। उसने अपने पिता शाहजहाँ को कैद कर लिया और कैद में ही 8 वर्षों बाद शाहजहाँ की मृत्यु हुई। औरंगजेब के शासनकाल में मुगल साम्राज्य का सबसे अधिक विस्तार हुआ। उसे कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। छत्तीसगढ़ में प्राचीन शासन पद्धति ही प्रचलित थी क्योंकि यहाँ पर किसी मुगल सूबेदार के शासन करने का उल्लेख नहीं मिलता।

किसानों, जमींदारों का विद्रोह

शाहजहाँ और औरंगजेब के समय में मुगल साम्राज्य के किसानों की हालत काफी बिगड़ने लगी थी। पूरे साम्राज्य का आर्थिक भार उन्हीं पर पड़ रहा था। सेना का खर्च, लाल किला व ताजमहल जैसी इमारतों के निर्माण का खर्च भी काफी बढ़ गया था। इसका नतीजा यह हुआ कि किसानों पर लगान का बोझ लगातार बढ़ता गया। अकबर के समय किसानों से सरकारी लगान के अलावा गाँव के जमींदार, मुखिया, पटवारी आदि भी किसानों से वसूली करते थे।

जब लगान ज्यादा हो जाता था, तब किसान या तो गाँव छोड़कर चले जाते थे या फिर मिलकर शासन के खिलाफ विद्रोह कर देते थे। औरंगजेब के समय कई विद्रोह हुए जिनमें किसानों की सक्रिय भूमिका थी। जैसे मथुरा के पास के जाट किसानों का विद्रोह, अलवर के मेवाती लोगों का विद्रोह, पंजाब के सतनाम पंथी व सिक्खों का विद्रोह, बुंदेलखण्ड के बुंदेलों का विद्रोह, अफगानिस्तान के रौशनियाओं का विद्रोह। इनमें आमतौर पर स्थानीय जमींदारों ने किसानों का साथ दिया। जमींदार चाहते थे कि वे स्वतंत्र राजा बनें। किसानों व जमींदारों के इन विद्रोहों ने मुगल साम्राज्य की जड़ें हिलाकर रख दी।

1. कौन–कौन लोग किसानों के उत्पादन का हिस्सा लेते थे ?
2. अगर किसान गाँव छोड़कर चले जाते तो जागीरदारों पर क्या असर पड़ता ?

जागीरों की कमी

मुगल शासन में अधिकारियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। लेकिन सभी अमीरों के लिए पर्याप्त जागीरें नहीं थीं। जागीरों की कमी के कारण जागीरदारों में असंतोष और अनुशासनहीनता बढ़ने लगी। जागीरदारों के सामने आए संकट का भी दबाव था। इस समस्या से बचने के लिए जागीरों के अंदर ही खेती को बढ़ावा दिया जा सकता था ताकि जागीरदारों की आय बढ़ सके। परंतु जागीरदारों की इस काम में रुचि नहीं थी क्योंकि जगीरदारों का तबादला होता रहता था एवं उन्हें हमेशा जागीर के छीने जाने का डर भी बना रहता था।

1. औरंगजेब के समय में जागीरों की कमी क्यों पड़ी ?
2. जागीरों की कमी का अमीरों पर क्या असर पड़ा ?
3. जागीरदार अपनी जागीर में खेती को क्यों नहीं बढ़ावा देना चाहते थे ?

साम्राज्य बढ़ाने की कोशिश

औरंगजेब के सामने जागीर की कमी से निपटने का एक और रास्ता था। वह था अपने राज्य को बढ़ाना और दूसरे राज्यों को अपने राज्य में मिला लेना।

मुगल साम्राज्य के पूर्व में अहोम राज्य था जो कि वर्तमान असम राज्य में है। औरंगजेब के अमीर मीर जुमला ने अहोम राजा को हरा दिया और उसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया। लेकिन मीर जुमला के मरने के बाद असम मुगलों के हाथ से निकल गया।

चित्र–7.1 औरंगजेब

मुगल साम्राज्य के दक्षिण में दो महत्वपूर्ण राज्य बीजापुर और गोलकुंडा थे। औरंगजेब ने सन् 1687 तक इन दोनों राज्यों को पराजित कर अपने साम्राज्य में मिला लिया। औरंगजेब जीत तो गया था लेकिन उसे जल्दी ही पता लग गया कि बीजापुर तथा गोलकुंडा को जीतने से उसकी कठिनाइयाँ बढ़ गईं। यह औरंगजेब के जीवन का आखिरी और सबसे कठिन समय था। उसे इन जीते हुए राज्यों के अधिकारियों को अपने पक्ष में करने के लिए जागीरें भी देनी पड़ी थीं। परंतु इस समय राज्यों से जितनी (लगान से) आमदनी होती थी उतनी ही वहाँ के अमीरों पर खर्च हो जाती थी। इस तरह इस विजय से कुछ खास फायदा नहीं हुआ और पुराने अधिकारियों के लिए जागीरों की कमी बनी रही।

औरंगजेब को अपने साम्राज्य के विस्तार करने की आवश्यकता क्यों हुई ?

जोधपुर व मेवाड़ का विद्रोह

जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह के बाद औरंगजेब उसके बेटे की जगह किसी और को वहाँ का राजा नियुक्त करना चाहता था। लेकिन राठौड़ वंश के राजपूतों को यह स्वीकार नहीं था। तब उन्होंने औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह कर दिया जिसमें उसे मेवाड़ (उदयपुर) के राणा का भी सहयोग मिला। यहाँ तक कि औरंगजेब के निर्णयों से नाखुश होकर उसके बेटे ने भी इन राजपूतों का साथ दिया। इसके बाद जो युद्ध हुआ, उसमें राजपूतों की हार तो हुई मगर वे लंबे समय तक लड़ते रहे।

शिवाजी व मराठा राज्य

मराठे, महाराष्ट्र के पश्चिमी पहाड़ी भागों के रहने वाले कुशल योद्धा थे। बीजापुर और गोलकुंडा जैसे दक्षिणी राज्यों में मराठा सरदारों को ऊँचे पद मिले हुए

चित्र–7.2 छत्रपति शिवाजी

थे। ऐसे ही एक सरदार शाह जी भोंसले और उसकी पत्नी जीजाबाई का बेटा शिवाजी था। शिवाजी एक स्वतंत्र मराठा राज्य बनाना चाहते थे।

शुरू में शिवाजी ने छोटे–छोटे मराठा जमींदारों को हराकर उनके क्षेत्र व किलों पर अपना अधिकार किया। फिर बीजापुर के सुल्तान से लड़ते रहे और अंत में बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ को मारकर एक महत्वपूर्ण विजय पाई। इसके बाद शिवाजी का सामना मुगलों से हुआ। शिवाजी ने मुगल सेनापति को भी हराकर अपमानित किया। फिर उसने मुगल साम्राज्य के सबसे महत्वपूर्ण व्यापार केन्द्र सूरत पर कब्जा कर लिया। औरंगजेब ने शिवाजी को काबू में लाने के लिए राजा जयसिंह को भेजा। जयसिंह ने शिवाजी को मुगलों की अधीनता स्वीकार करने व आगरा जाकर बादशाह के सामने प्रस्तुत होने पर राजी किया। दरबार में शिवाजी के स्वतंत्र व्यवहार से नाराज होकर औरंगजेब ने उसे बंदी बना लिया। लेकिन शिवाजी अपनी बद्धिमता से बाहर निकलने में सफल हुए और वापस महाराष्ट्र पहुँच गए। शिवाजी लगातार मुगलों से लड़ते रहे। मुगल सेना से लड़ने का उनका तरीका अनोखा था। वह मुगलों से सीधा युद्ध न करके उन पर अचानक तेजी से हमला करते और नुकसान पहुँचाकर वापस पहाड़ी किलों में छुप जाते थे। इस युद्ध को छापामार युद्ध कहते हैं। युद्ध के इस तरीके से वे बड़ी–से–बड़ी सेना को भी हरा सकते थे।

शिवाजी ने सन् 1674 ई. में खुद को स्वतंत्र राजा घोषित कर **छत्रपति** की उपाधि धारण की। शिवाजी ने सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु तक अपना राज्य फैलाया। सन् 1680 ई. में शिवाजी का देहांत हो गया मगर मराठा राज्य और औरंगजेब के बीच संघर्ष जारी रहा।

औरंगजेब की धार्मिक नीति

औरंगजेब एक रूढ़िवादी मुसलमान था और चाहता था कि मुगल साम्राज्य इस्लाम के नियम कानून से चले।

अकबर ने मुगल साम्राज्य को एक मिलाजुला स्वरूप दिया था, जिसमें सभी धर्मों का आदर होता था। लेकिन औरंगजेब ने इस नीति को स्वीकार नहीं किया। सबसे पहले उसने दरबार में गैर इस्लामी परम्पराओं को बंद किया। उसने संगीत, चित्रकला, दूसरे धर्मों के त्यौहारों को मनाना आदि बंद करवा दिया। फिर कुछ सालों बाद उसने कई ऐसे कदम उठाए जिससे दूसरे धर्म के लोगों को चोट पहुँची। औरंगजेब ने हिंदुओं पर जजिया कर फिर से लागू किया। उसने कई प्रसिद्ध मंदिरों को तोड़ने का भी आदेश दिया।

औरंगजेब के समय किसानों व जमींदारों का विरोध तीव्र हो गया था और मनसबदारों को देने के लिए जागीरों की कमी हो गई थी। ऐसे में मुगल साम्राज्य संकट से गुजर रहा था। औरंगजेब चाहता था कि कट्टर नीतियों को अपनाकर सभी मुसलमानों को वह अपने साथ रख सकेगा। औरंगजेब की इस नीति से मुगल साम्राज्य को नुकसान ही हुआ क्योंकि यह साम्राज्य कई धर्म के लोगों के सहयोग से बना था। शायद इसी बात को स्वीकार करते हुए औरंगजेब ने कई हिन्दू मंदिरों व मठों को दान भी दिया था। उज्जैन के महाकाल मंदिर और चित्रकूट के राम मंदिरों में ऐसे दान के आदेश आज भी देखे जा सकते हैं। एक बार सूरत शहर के एक काजी के विरोध में सारे हिन्दू व्यापारी शहर छोड़कर चले गए। इससे व्यापार ठप्प हो गया। तब औरंगजेब ने उन व्यापारियों को पत्र लिखकर आश्वासन दिया कि उनकी धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा की जाएगी। यही नहीं, उसकी

कट्टर नीतियों के बावजूद उसके दरबार के सर्वोच्च पदों पर जयसिंह और जसवंत सिंह जैसे कई हिन्दू थे। औरंगजेब के शासन काल में हिन्दू अमीरों की संख्या लगातार बढ़ती गई। अकबर के समय में कुल 30 हिन्दू अमीर थे जबकि शाहजहाँ के समय लगभग 98 हिन्दू अमीर थे। लेकिन औरंगजेब के समय हिन्दू अमीरों की संख्या बढ़कर 182 हो गई थी। इनमें ज्यादातर राजपूत व मराठा थे।

औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीतियों के बावजूद इतने सारे राजपूत व मराठा अमीरों ने उसका साथ क्यों दिया होगा ?

इन सभी बातों से पता चलता है कि औरंगजेब ने साम्राज्य के हित में कई अलग–अलग नीतियाँ अपनाई ।

सन् 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हो गया। कई जमींदारों ने भी विद्रोह किए और अपनी स्वतंत्र राज्य बना लिए। जैसे, मराठों का अलग राज्य बना, जाट जमींदारों ने भी एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की और पंजाब के सिक्ख भी स्वतंत्र हो गए। हैदराबाद, बंगाल और अवध प्रांत के सूबेदारों ने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए। ये सभी नाम के लिए स्वयं को मुगल बादशाह के अधीन मानते रहे पर वास्तव में स्वतंत्र रूप से शासन करने लगे थे। इस तरह विशाल मुगल साम्राज्य टूटकर बिखर गया था।

छत्तीसगढ़ में इस समय रतनपुर एवं रायपुर राज्य में कल्चुरि राजा राज कर रहे थे। कल्चुरी शासकों के संबंध में आप पूर्व कक्षा में पढ़ चुके हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. सही/गलत बताएँ–

1. औरंगजेब के उत्तराधिकारी शक्तिशाली शासक थे।
2. बीजापुर और गोलकुंडा राज्य में मराठा सरदारों को ऊँचे पद मिले हुए थे।
3. शाहजहाँ के बीमार होते ही उनके पुत्रों में आपस में युद्ध होने लगा।
4. औरंगजेब के शासनकाल में मुगल साम्राज्य का अधिक विस्तार नहीं हुआ।
5. मथुरा के पास बुंदेलों का विद्रोह हुआ।

2. प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. औरंगजेब की दो बड़ी समस्याओं को अपने शब्दों में समझाइए।
2. औरंगजेब ने जागीर की समस्या को दूर करने के लिए कौन–कौन–से उपाय किए ?
3. मराठों की सेना मुगलों की सेना को किस प्रकार हरा पाती थी ?
4. मुगल साम्राज्य के पतन के लिए आप औरंगजेब को कहाँ तक उत्तरदायी मानते हैं ?
5. औरंगजेब ने हिंदुओं के विरूद्ध एवं पक्ष में जो कदम उठाए, इन दोनों बातों के दो–दो उदाहरण दीजिए।

योग्यता विस्तार–

अकबर और औरंगजेब की नीतियों की तुलना करते हुए परस्पर चर्चा कीजिए।